246 Р
Н
64

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1331/10/14

आह्वानांक Call No.

अवाप्ति सं० Acc. No. 246

ओ३म्

ऐतिहासिक घटना

महाराजा कुंभसिंह

लेखक—

प्रोफेसर मनोहर एम.ए.

प्रकाशक—

प्रभुदयाल रहने वाले भजनोपदेशक जलाली

जिला अलीगढ़

(मौजूदा निवासस्थान देहली)

मूल्य -) आना

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR 1931

SL
1711
89143
M11A

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 246
Date 4.12.71
GOVT. OF INDIA

बस्ती की थी छिड़ी रागिनी, आज़ादी का गाना था।
भारत के कोने-कोने में, होता यही तराना था॥
उधर खड़ी थी लक्ष्मी बाई, और पेशवा नाना था।
इधर बिहारी वीर बांकुड़ा खड़ा हुआ मस्ताना था॥
अस्सी वर्षों की हड्डी में जागा जोश पुराना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

नस नस में उज्जैन वंश का बहता रक्त पुराना था।
भोजराज का वंशज था, उसका भी राजघराना था॥
बालपने से ही शिकार में उसका विकट निशाना था।
गोला गोली तेग कटारी यही वीर का बाना था॥
उसी जोश पर युद्ध बुढ़ापे में भी उसने ठाना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

'राम अनुज सम जान, लखन ज्यों उनके सदा सहायी थे।
गोकुल में बलदाऊ के प्रिय जैसे कुँअर कन्हाई थे॥
वीर श्रेष्ठ आल्हा के प्यारे ऊदल ज्यों सुखदाई थे।
अमर सिंह भी कुँअर सिंह के वैसे ही प्रिय भाई थे॥
कुँअर सिंह का छोटा भाई वैसा ही मस्ताना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

देश देश में व्याप्त चहूँ दिसि उसकी सुयश कहानी थी।
उसके दया धर्म की गाथा सब को याद ज़बानी थी॥
रोबीला था बदन और उसकी चौड़ी पेशानी थी।
जग ज़ाहिर जगदीशपुर में उसकी प्रिय रजधानी थी॥
वहीं कचहरी, थी आफिस था, वहीं कुंअर का थाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

बचपन बीता खेल कूद में और जवानी ऊधम में।
धीरे धीरे कुंअर सिंह भी आ पहुंचे चौथेपन में॥
उसी समय घटना कुछ ऐसी घटी देश के जीवन में।
फैल गया विद्वेश फिरँगी-प्रति सहसा सब के मन में॥
खौल उठा सन् सत्तावन में सब का खून पुराना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

बंगाले के बारकपुर ने आग द्रोह की सुलगाई।
लपटें उसकी उठीं जोर से दिल्ली औ, मेरठ धाई॥
काशी उठी, लखनऊ जागा, धूम ग्वालियर में छाई।
कानपूर में और प्रयाग में खड़े हो गये बलवाई॥
रण-चंडी हुँकार कर उठी, शत्रु हृदय थर्राना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

सुन रूर के आह्वान, समर में कूद पड़ी लक्ष्मी बाई।
स्वतन्त्रता की ध्वजा देशवा ने बिठूर में फहराई॥
खोई दिल्ली फिर कुछ दिन को वापस मुगलों ने पाई।
थर थर करने लगे फिरंगी, उनके सर शामत आई।
कांप उठे अंग्रेज कहीं भी उनका नहीं ठिकाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥
आग क्रान्ति की धधक उठी, पहुँची पटने में चिनगारी।
रणोन्मत्त योद्धा भी करने लगे युद्ध की तैयारी॥
चन्द्रगुप्त के वंशज जागे करने माँ की रखवारी।
शेरशाह का खून लगा करने तेजी से रफ्तारी॥
पीर अली फान्सी पर लटका, वीरबहादुर दाना था।
सब कहते हैं कुंयर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥
पटने का अंग्रेज कमिश्नर टेलर जी में घबड़ाया।
चिट्ठी भेज जमींदारों को उसने घर पर बुलवाया॥
बुद्धि भ्रष्ट थी हुई और आखों पर था पर्दा छाया।
कितनों ही को जेल दिया और फांसी पर भी लटकाया॥
कुंअर सिंह के नाम किया उसने जारी परवाना था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

कुंअर सिंह ने सोचा जब उनके मुन्शी की हुई तलाश ।
दगाबाज़ अब हुए फिरंगी इनका ज़रा नहीं विश्वास ॥
उसी समय पहुंचे विद्रोही दानापुर से उनके पास ।
हाथ जोड़ कर बोले वे-सरकार, आप की ही है आस ।

सिंहनाद कर उठा केशरी उसे समर में जाना था ॥
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था ।

'गांगी तट पर अर्द्ध रात्रि को हुई लड़ाई ज़ोरों से ।
रणोन्मत्त हो देशी सैनिक उलझ पड़े जब गोरों से ॥
शून्य दिशायें कांप उठीं तब बन्दूक के शोरों से ।
लेकिन टिके न गोरे, भागे, प्राण बचा कर चोरों-से ॥

कुछ क्षण में अंग्रेज फौज का वहां न शेष निशाना था
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था ॥

आरा पर तब हुई चढ़ाई, हुआ कचहरी पर अधिकार ।
फैल गया तब देश २ में कुंअर सिंह का जय जय कार ॥
लोप होगई तब आरा से बिल्कुल अंग्रेजी सरकार ।
नहीं ज़रा भी होने पाया मगर किसी पर अत्याचार ॥

भाग छिपे अंग्रेज किले में, सब लुट चुका खज़ाना था
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था ॥

खबर मिली आरा की तो, आयर बक्सर से चढ़ धाया।
विकट तोपखाना था सँग में फौजें था काफी लाया॥
देशद्रोहियों का भी भारी दल था उसके सँग आया।
कब तक टिकते कुँअर सिँह, आरे से उखड़ गया पाया॥

अपने ही जब बेगाने थे, उलटा हुआ जमाना था।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

हुआ युद्ध जगदीशपुर में मचा वहाँ पूरा घमसान।
अमर सिँह का तेज देख कर दुश्मन दल भी था हैरान॥
महाराज डुमरांव वहीं थे, ज्यों मुगलों में राजा मान।
अमर सिंह झपटा तेजी से लेकर इनपर नग्न कृपाण॥

झपटा जैसे मानसिंह पर वह प्रताप सिंह राणा था।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

हौदे में थे महाराज, पड़ गई तेग की खाली वार।
नाक कट गई पीलवान की हाथी भाग चला बेज़ार॥
अमर सिँह भी बीच सैन्य से निकल गया सबको ललकार
'दीद जी' थे चले गये—फिर लड़ने की थी क्या दरकार॥

पड़ा हुआ था शून्य महल, जगदीशपूर वीराना था।
सब कहते हें कुँअर सिँह भी बड़ा वीर मर्दाना था॥

राजा कुँअर सिंह जा पहुंचे, अत्तरौलिया के मैदान ।
आ पहुंचे अंग्रेज उधर से हुआ परस्पर युद्ध महान ॥
हटा वीर कुछ कौशल पूर्वक, झपट पड़ा फिर बाज समान
भाग चले मिलमैन बहादुर बैल-शकट पर लेकर प्राण ॥

आकर छिपे किले के अन्दर, उनको प्राण बचाना था ।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था ॥

विजयी राजा कुँअर सिंह तब आजमगढ़ पर चढ़ आया ।
कर्नल डेम्स फौज ले सँग में, उससे लड़ने को आया ॥
किन्तु कुँअर के साथ तनिक भी नहीं समर में टिक पाया
भागा वह भी गढ़ के अन्दर करके प्राणों की माया ।

आजमगढ़ में कुँअर सिंह का फहरा उठा निशाना था ।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था ॥

चले बनारस, तब कैनिग के जी में घबड़ाहट छाई ।
अस्सी वर्षों के इस बूढ़े ने अजीब आफ़त ढाई ॥
लार्ड मार्कर के सँग फौजें सन्मुख सागर में आई ।
किन्तु नहीं टिक सकीं देर तक उनने भी मुँह की खाई ॥

छिपा दुर्ग में सेनापति, उसका भी वहीं ठिकाना था ।
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था ॥

आगे बढ़ते चले कुँअर, था ध्यान लगा झाँसी की ओर।
सुनी मृत्यु लक्ष्मी बाई की लौट पड़े तब बढ़ना छोड़ ॥
पीछे से पहुँचा लगर्ड, थी लगी प्राण की मानों होड़ ।
गाजीपुर के पास पहुँच कर, हुआ युद्ध पूरा घनघोर ॥
विजय हाथ थी कुंअर सिंह के किसको प्राण गंवाना था
सब कहते है कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था ॥

डगलस आकर जुटा उधर से, लेकर के सेना भरपूर ।
शत्रु सैन्य था प्रबल और सब ओर घिर गया था वह शूर
लगातार थी लड़ी लड़ाई, थे थक कर सब सैनिक चूर ॥
चकमा देकर चला बहादुर, दुशमन दल था पीछे दूर ।
पहुँची सेना गंगा तट, उस पार नाव से जाना था ॥
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा बीर मर्दाना था ।

दुश्मन तट पर पहुँच गये, जब कुंअर सिंह करते थे पार
गोली आकर लगी बांह में, दायां हाथ हुआ बेकार ।
हुई अपावन बाहु जान बस, काट दिया लेकर तलवार ॥
'लो गंगे, यह हाथ आज तुझको ही देता हूँ उपहार ।
वीर भक्त का वही जाह्नवी को मानों नजराना था ।
सब कहते हैं कुंअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था ॥

इस प्रकार कर चकित शत्रु दल, कुँअर सिंह फिर घर आये
फहरा उठा पताका गढ़ पर, दुश्मन बेहद घबराये ॥
फौज लिये ली ग्रैन्ड चले, पर वे भी जीत नहीं पाये ।
विजयी थे फिर कुँअर सिंह अंग्रेज काम रण में आये

घायल था वह वीर किन्तु, आसान न उसे हराना था
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था ॥

यही कुँअर की अन्तिम जय थी और यही अन्तिम संग्राम
आठ महीने लड़ा शत्रु से बिना किये कुछ भी विश्राम ।
घायल था वह वृद्ध केशरी, था सब शक्ति हुई बेकाम ॥
अधिक नहीं टिक सका और वह वीर चला थक कर सुर धाम

तब भी फहरा रहा दुर्ग पर उसका विजय निशाना था
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी, बड़ा वीर मर्दाना था ॥

बाद मृत्यु के अंग्रेजों की फौज वहां गढ़ पर आई ।
कोई नहीं बचा था थी महलों में निर्जनता छाई ।
किन्तु शत्रु ने शुभ्र भवन पर भी प्रतिहिंसा दिखलाई ॥
देवालय विध्वंस किया और देव मूर्तियां गिरवाई ।

दुश्मन दल की दानवता का कुछ भी नहीं ठिकाना था
सब कहते हैं कुँअर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था ॥

धन्य भाग, श्री कुँवर बहादुर भारत के थे अमित अतीत ।
इनका सिंह हुंकार अब भी दुश्मन होते हैं भयभीत ॥
वीर प्रसविनी भूमि धन्य है, धन्य वीर यह, धन्य अतीत ।
गाते थे औ' गावेंगे हम हरदम उसके जय के गीत ॥

स्वतंत्रता का सैनिक था—आज़ादी का दीवाना था ।
सच कहते हैं कुँवर सिंह भी बड़ा वीर मर्दाना था ॥

हमारी किताबों का नोटिस

जो कि इन्हीं साइज़ में छपी हुई हैं ।

बहादुर देवी लक्ष्मी बाई =)

महाराजा कुँवर सिंह =)

बहादुर गीतांजली =)

सत्याग्रह का नगाड़ा –)

लड़कों की लहर =)

प्रचारार्थ बाँटने के लिये २) रु० सैकड़ा भेजी जायगी ।

मिलने का पता—

मधुसूदनलाल बैदे वाले मेन रोड देहली

स्वाधीन प्रेस देहली में छपा